बेजिंग ऑलम्पिक

बेजिंग का मस्कॉट है – पाँच फूवा (शुभ गुड़ियाएँ)। ये ऑलम्पिक छल्लों के रंग और चीनी संस्कृति के तत्वों (पानी, जंगल, आग, पृथ्वी, हवा) को दर्शाती हैं। इनमें मछली, जायंट पाण्डा, आग, तिब्बती हिरण और अबाबील की झलक देखी जा सकती है।

इस 8 अगस्त से 29वें ऑलम्पिक खेल बेजिंग में शुरू हो रहे हैं। अखबार, टी.वी., गुमठी, चौराहों सब तरफ इसकी चर्चा है। सुनते हैं चीन ने इस आयोजन पर 45 अरब डॉलर खर्च किए हैं। एक डॉलर की कीमत आजकल हमारे 42.70 रुपए के बराबर है। 2001 में तय हुआ था कि 2008 के ऑलम्पिक चीन के बेजिंग में होगे। तब से चीन के हज़ारों लोग अपने-अपने लश्कर के साथ बेजिंग को सँवारने में लगे हैं। बड़े-बड़े भव्य स्टेडियम नए सिरे से बनाए गए हैं। बेजिंग को सुन्दर दिखाने के लिए बड़े पैमाने पर मकानों, होटलों तथा कुरूप मानी जाने वाली चीज़ों को हटाया जा चुका है। ऑलम्पिक के खेल-खिलाड़ियों से ज़्यादा चर्चा दूसरी चीज़ों की हो रही है। जैसे – स्टेडियम पर कितना खर्च हुआ है?, बेजिंग की होटलों को चमकीला बनाने में कितना खर्च हुआ है?, कितने नए रेल्वे स्टेशन बने हैं?

हमारे देश की ही तरह चीन के भी कई हिस्से तंगहाल हैं। ऐसे में एक खेल आयोजन पर इतने संसाधन लगाना क्या उचित है? काश ये खेल सादगी से होते और इसे भव्य बनाने में लगने वाला रुपया-पैसा उन इलाकों में लगता जिन्हें इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है।

फिर भी यह सुनकर, सोचकर और देखकर कितना अच्छा लगता है कि दुनिया के कोने-कोने से खिलाड़ी आएँगे। महीने भर साथ रहेंगे। दुनिया के हर रंग की एक छोटी-सी दुनिया चीन में एक महीने दिखाई देगी। पूरी दुनिया प्रेम और सद्भाव के साथ किसी एक जगह इकट्ठी हो रही होगी। सबसे छोटे देश के किसी अजनबी खिलाड़ी के लिए दुनिया के सबसे बड़े देश के लोग भी तालियाँ बजाएँगे। अनुमान है कि इस बार चार अरब दर्शक इन खेलों को देखेंगे – सत्तर लाख लोग तो चीन में स्टेडियम में ही बैठे होंगे। ऑलम्पिक दूसरे खेल आयोजनों से इस मायने में भी अलग हैं कि उसमें पेशेवर खिलाड़ी नहीं भाग ले सकते। "खेलना और अच्छे से खेलना" – इन खेलों में ज़्यादा खास है। जीतने से भी ज़्यादा।

तुम्हारी नज़र ऑलम्पिक की खबरों पर तो रहती ही होगी। वहाँ से तुम्हें कई और खट्टी-मीठी बातें पता चलेंगी। चकमक में इस बार तुम्हें ऑलम्पिक की एक-दो चीज़ें पढ़वा रहे हैं। शायद तुम्हें पसन्द आएँ...

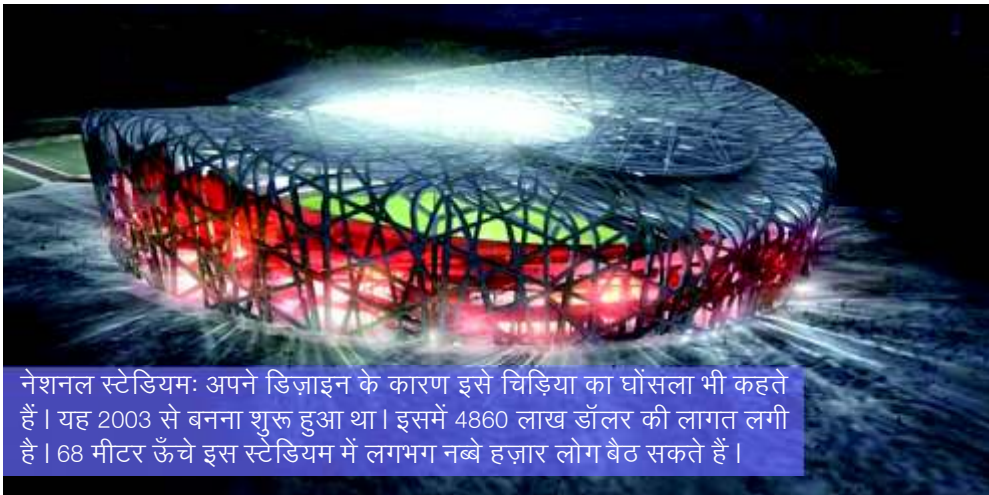

नेशनल स्टेडियमः अपने डिज़ाइन के कारण इसे चिड़िया का घोंसला भी कहते हैं। यह 2003 से बनना शुरू हुआ था। इसमें 4860 लाख डॉलर की लागत लगी है। 68 मीटर ऊँचे इस स्टेडियम में लगभग नब्बे हज़ार लोग बैठ सकते हैं।